विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ ,लखीसराय

वर्ग-दशम्

विषय-हिन्दी

// कन्यादान //

आपके विचार से माँ ने ऐसा क्यों कहा कि “लड़की होना , पर लड़की जैसी मत दिखाई देना” ?

उत्तर-

इस कविता में “लड़की होना , पर लड़की जैसी मत दिखाई देना” में मां अपनी बेटी को यह समझाना चाहती है कि विनम्रता , सहनशीलता , शिष्टता और लज्जा , ये स्त्री सुलभ गुण जरूर हैं लेकिन इन्हें कभी अपनी कमजोरी मत बनने देना।

मां अपनी बेटी को अबला और कमजोर की जगह सशक्त और मजबूत बनाना चाहती है। ताकि वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो और हर विपरीत परिस्थिति का दृढ़ता से सामना कर सके। यह समाज महिलाओं को दुर्बल मानकर उसका शोषण करने लगता है। इसीलिए मां उसे सबल और सजग रहने को सलाह देती है।

प्रश्न 2.

“आग रोटियाँ सेंकने के लिए है।

जलने के लिए नहीं”।

(क) इन पंक्तियों में समाज में स्त्री की किस स्थिति की ओर संकेत किया गया है ?

उत्तर -

कवि ने अपनी इन पंक्तियों में समाज में व्याप्त कुप्रथाओं , महिलाओं के साथ होने वाली हिंसा , अत्याचार और शोषण की ओर इशारा किया है। आज भी हमारे भारतीय समाज में दहेज प्रथा जैसी कुप्रथा के कारण बहुओं को बड़ी आसानी से आग के हवाले कर दिया जाता है।

दहेज न लाने पर बहुओं को तरह-तरह की यातनाएं दी जाती हैं। उन पर कई तरह के अत्याचार किए जाते हैं। मारने पीटने के अलावा कई लोग दहेज के लालच में इतने अंधे हो जाते हैं कि बहुओं को आग के हवाले करने में भी नहीं हिचकते हैं।